यज्ञ की शुरुआत में बाबा ने कईयों को बन्धन से छुड़ाकर उन्हें शिवशक्ति स्वरूपा बनाया। ईश्वरीय ज्ञान में वो चुम्बक था जो हम एक मिनट भी उसके बिना रह नहीं पाते थे। रोज़ ईश्वरीय ज्ञान ना सुनें तो जैसे ऐसे लगता कि शरीर से प्राण ही निकल गया हो! जहाँ ये ईश्वरीय ज्ञान नया होने के कारण समाज में विरोध तो था लेकिन बाबा की शक्ति और हमारी लगन के आगे सबकुछ फीका हो जाता, वो विरोध, विरोध ही नहीं लगता बल्कि और ही हम शक्तिशाली अनुभव करते।

ईश्वरीय शक्ति के आगे कोई न टिक पाया...

जो ज्ञान भगवान ने अर्जुन को सुनाया, वो ज्ञान उस वक्त बाबा ने हमें भी थोड़ा-थोड़ा सुनाया। बाबा का ज्ञान मुझे इतना अच्छा लगा कि मन में ख्याल आया कि यह ज्ञान हमारे अपने लौकिक मात-पिता और परिवार के पास भी हो ताकि उनका दुःख भी खत्म हो जाए और वो सुखी हो जाएं। ये बात मैंने बाबा को बताई तो बाबा ने कहा बच्ची मैं माताओं का सर्वेन्ट हूँ, चलो मैं भी चलता हूँ। बाबा हाथ पकड़कर मेरे साथ-साथ चले। इतना बड़ा बाबा निराकार-निरंहकारी बनकर चले। कदम-कदम में हमने बाबा का चरित्र देखा। बाबा जब माता से मिले तो वो रो रही थी क्योंकि उनके बच्चे की मृत्यु का दुःख था। बाबा ने कहा कि बच्ची ये कपड़े को बदल दो क्योंकि इससे ये बच्चा याद आयेगा और आप ये नया वस्त्र पहन लो जिससे आपको श्रीकृष्ण जैसा बच्चा मिलेगा, तो दुःख तो नहीं होगा ना! और माता को कहा कि कल सत्संग में आना। जब वो बाबा के पास आई तो माता को बाबा का साक्षात्कार हुआ और बहुत अच्छा अनुभव भी हुआ। उसे देखकर उसके माँ-बाप और परिवार जोकि अय्याशी घर के थे मांस, अण्डा, शराब आदि का सेवन करते थे। परिवार वालों ने भी जब देखा कि इन्हों को सुख मिल रहा है तो वो भी बाबा के पास मिलने आये। तो बाबा ने कहा कि इनको पहले मम्मा से मिलाओ। जैसे ही मम्मा को उन्होंने पहली बार देखा तो उनको श्रीलक्ष्मी का साक्षात्कार हुआ और वो भी ज्ञान में चल पड़े।

ऐसे धीरे-धीरे बाबा के पास सतसंग में बहुत अच्छे-अच्छे बड़े घरों की माताएं और कन्याएं आने लगीं। उस वक्त ब्रिटिश का राज होने के कारण उनके पति विदेश में धन्धा अर्थ जाते थे और एक-दो मास के लिए घर आते थे। लेकिन जब आते थे तो माताओं ने उनको पवित्रता के बारे में बताया तो वे समझ ही नहीं सके इसके कारण बहुत हंगामा हुआ। लेकिन माताओं ने पवित्रता के व्रत के साथ कोई समझौता नहीं किया। ये बात तो हिस्ट्री में हम सबने सुना ही है ना, इसीलिए इसको आगे नहीं बताती हूँ।

दादी कहती हैं कि बाबा में एक चुम्बक था। जिस कारण हम एक मिनट भी बाबा से बिछड़े नहीं। एक बार मैंने बाबा से कहा कि मैं स्कूल छोड़ दूँ? तो बाबा ने कहा, नहीं बच्ची। आपके स्कूल जाने से कई बच्चे और टीचर में भी ज्ञान की जागृति आएगी। मैं धक्के खाकर तो जाती थी स्कूल में, लेकिन लगन मेरी बाबा के पास ही थी। मैंने देखा कि कई माताएं पवित्रता के बन्धन के कारण यहाँ आ नहीं सकती थी। लेकिन बाबा को वें अन्दर ही अन्दर याद करती और बाबा को कहती मैं ज्ञान अमृत के बिना कैसे रह सकेंगी! जब तक हम ज्ञान अमृत न पिएं तो हमारा प्राण ही निकल जाएगा। ये मन की भीतरी लगन की आवाज़ बाबा तक पहुँचती था।

फिर जब बहुत बच्चे आने लगे तो बाबा ने हॉस्टल खोला जिसमें बाबा ने मुझे टीचर बन पढ़ाने की ज़िम्मेवारी दी। बाबा ने हॉस्टल के बच्चों की दिनचर्या सेट करके दिया और मैं उन बच्चों को पढ़ाने लगी। उनकी दिनचर्या सुबह साढ़े तीन बजे उठाना, नहलवाना फिर उन सबको बगीचे में ले जाना। उस समय ही बाबा ने सभी बच्चों को सफेद ड्रेस पहनाना शुरू कर दी। बच्चे बहुत रॉयल, सफाई वाले बहुत अच्छे, भोजन बहुत अच्छा, इकट्ठा बैठकर खाना, बच्चे की अच्छे से खातिरी करना जैसे कि एक राजकुमार-राजकुमारी हो। हॉस्टल में मुख्य चार पीरियड होते थे। उन्हें अंकगणित, सिंधी इतिहास और भूगोल पढ़ाया जाता था।

हम चार बहनें थीं। एक-एक पीरियड लेते थे। बाबा आकर के चेक करते थे कि हम क्या और कैसे पढ़ाते हैं। रोज़ रात्रि को सारे दिन की दिनचर्या हम बाबा को बताते थे। ये भी हमारा बहुत बड़ा सौभाग्य था जो शुरू से ही बाबा के साथ-साथ हमें रहने का भाग्य मिला।

मैं रोज़ दुःखी माताओं को ईश्वरीय ज्ञान सुनाकर सेवा करती थी। बाबा ने इस तरह हमको तैयार किया और बाबा ने मुझे शुरू में ही तुम शिवशक्ति हो ये वरदान दिया था, इसलिए मुझे कभी भी डर या भय नहीं लगता था। बाबा मुझे बांधेलियों के पास भेजते थे और इतने विरोध के बावजूद भी मैं बाबा का सन्देश लेकर उनके घर जाती थी और बाबा का संदेश सुनते ही बहुत ही खुश होती थी। मैं उनकी बातों को सुनकर बाबा के पास जाकर बताती थी। बाबा बहुत ही उन्हें सकाश देते थे।

खुशखबरी...

आ गई शिव संदेश और राजयोग कॉमेन्ट्री की नई कुंजी...

हम सभी जितने भी जिज्ञासु या आगंतुकों से मिलते हैं तो उस समय होता है कि कुछ इनको परमात्मा के बारे में बताया जाये,तो वैसे तो हम बताते ही हैं लेकिन उसके साथ-साथ कुछ लिखित सामग्री अगर दी जाये तो उसको पढ़कर उनके अंदर उसे जानने की जिज्ञासा और बढ़ जायेगी। इसी ध्येय को लेते हुए हमने 'परमपिता परमात्मा शिव का संदेश' और परमात्मा से सहज योग के लिए 'राजयोग मेडिटेशन कॉमेन्ट्री' की एक ज़ेबी किताब या पॉकेट बुक डिज़ाइन किया है जो बहुत ही कारगर है। जिसमें परमात्मा का पूरा संदेश और उनसे मिलन मनाने की सहज विधि के लिए अभ्यास करने की कॉमेन्ट्री भी है। आप इसे ओमशान्ति मीडिया,शांतिवन से प्राप्त कर सकते हैं।

ओमशान्ति मीडिया,ब्रह्माकुमारीज़,
आनंद भवन,शांतिवन,आबू रोड(राज.-307510)
मो.- 9414154344, 9414006096, 9414182088
ई.मेल - omshantimedia@bkivv.org

कोरापुट-ओडिशा। 'खुशी सफलता की कुंजी' विषय पर सम्बोधित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. शारदा दीदी,दिल्ली। मंचासीन हैं राजयोगिनी ब्र.कु. रुकमणी दीदी,माउंट आबू, 7वें बटालियन कमांडर एस.एन. नायक एवं डी.एफ.ओ. भास्कर राव।

ब्रह्मपुर-ओडिशा। प्रभु उपहार रिट्रीट सेन्टर के परिसर में आयोजित सार्वजनिक कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए मुख्य जिला कृषि अधिकारी रवि नारायण पंडा, ब्रह्मपुर स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी के निदेशक दीपक राव, ब्रह्मपुर सबज़ोन निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. माला दीदी, ब्र.कु. प्रवती तथा अन्य।